❍ 01 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗बाप को बड़े प्यार से याद किया ?∗

➢➢ ∗अपने से बड़ों का रीगार्ड रखा ?∗

➢➢ ∗नथिंग न्यू के पाठ द्वारा विघनो को खेल समझकर पार किया ?∗

➢➢ ∗सत्यता की विशेषता से आत्मा रुपी हियर की चमक को बढाया ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करने के लिए सदा साक्षी बन कार्य करो।∗ साक्षी अर्थात् सदा न्यारी और प्यारी स्थिति में रह कर्म करने वाली अलौकिक आत्मा हूँ, अलौकिक अनुभूति करने वाली, अलौकिक जीवन, श्रेष्ठ जीवन वाली आत्मा हूँ-यह नशा रहे। ∗कर्म करते यही अभ्यास बढ़ाते रहो तो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेंगे।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं डबल लाइट हूँ"*

〰✧ सदा अपने को डबल लाइट अनुभव करते हो? *जो डबल लाइट रहता है वह सदा उड़ती कला का अनुभव करता है। क्योंकि जो हल्का होता है वह सदा ऊँचा उड़ता है, बोझ वाला नीचे जाता है। तो डबल लाइट आत्मायें अर्थात् सर्व बोझ से न्यारे बन गये।*

〰✧ *बाप का बनने से 63 जन्मों का बोझ समाप्त हो गया। सिर्फ अपने पुराने संकल्प वा व्यर्थ संकल्प का बोझ न हो। क्योंकि कोई भी बोझ होगा तो ऊँची स्थिति में उड़ने नहीं देगा। तो डबल लाइट अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से हल्का-पन स्वत: हो जाता है। ऐसे डबल लाइट को ही 'फरिश्ता' कहा जाता है।*

〰✧ फरिश्ता कभी किसी भी बन्धन में नहीं बँधता। तो कोई भी बँधन तो नहीं है! मन का भी बन्धन नहीं। जब बाप से सर्वशक्तियाँ मिल गई तो सर्व शक्तियों से निर्बन्धन बनना सहज है। *फरिश्ता कभी भी इस पुरानी दुनिया के, पुरानी देह के आकर्षण में नहीं आता। क्योंकि है ही डबल लाइट। तो सदा ऊँची स्थिति में रहने वाले। उड़ती कला में जाने वाले 'फरिश्ते' हैं, यही स्मृति अपने लिए वरदान समझ, समर्थ बनते रहना।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *मास्टर सर्वशक्तिवान को कोई रोक नहीं सकता।* जहाँ सर्व शक्तियाँ हैं वहाँ कौन रोकेगा! कोई भी शक्ति की कमी होती है तो समय पर धोखा मिल सकता है।

〰✧ मानो सहनशक्ति आप में हैं लेकिन निर्णय करने की शक्ति कमजोर है, तो जब ऐसी कोई परिस्थिति आयेगी जिसमें निर्णय करना हो, उस समय नुकसान हो जायेगा, होती एक ही घडी निर्णय करने की है - हाँ या ना, लेकिन उसका परिणाम कितना बडा होता है तो *सब शक्तियाँ अपने पास चेक करो, ऐस नहीं ठीक है, चल रहे हैं, योग तो लगा रहे हैं।*

〰✧ *लेकिन योग से जो प्राप्तियाँ हैं - वह सब हैं?* या थोडे में खुश हो गये कि बाप तो अपना हो गया। बाप तो अपना है लेकिन प्रापर्टी (वसा) भी अपनी है ना या सिर्फ बाप को पा लिया - ठीक है? वर्से के मालिक बनना है ना?

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *तो साक्षीपन का तख्त छोड़ो नहीं। जो अलग-अलग पुरुषार्थ करते हो उसमें थक जाते हो। आज मन्सा का किया, कल वाचा का किया, सम्बन्ध-सम्पर्क का किया तो थक जाते हो। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुम: तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सदा एक दूसरे का रिगार्ड रख, कर्म करना,*

➳ _ ➳ मीठे मधुबन के डायमण्ड हॉल में, मै भाग्यवान आत्मा... प्यारे बाबा से मिलन मना रही हूँ... और सोच सोचकर अभिभूत हूँ... कितनी मेहनत करके, भगवान ने मझे देह के दलदल रुपी दर्गन्ध से निकाल कर... *गुणो की

प्रतिमूर्ति बना दिया है... सिवाय मीठे बाबा के भला, किसको मेरी यूँ फ़िक्र थी... कौन मुझे यूँ प्यारा और मीठा... फिर से बना सकता था... सिवाय मेरे बाबा के.*.. आज जीवन पवित्रता और दिव्यता की अनोखी अदाओ से सजकर... विश्व को मेरा जो दीवाना बना रहा है... वह मेरे मीठे बाबा का मुझको दिया हुआ असीम प्यार है... *जिसने मुझ आत्मा को, देह आम से आत्मा खास बना कर.*.. विश्व जगत में अलौकिकता से चमका दिया है...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को कर्म की गुह्य गति को समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *आत्मिक भाव में स्थित रहकर... सदा एक दूसरे को सम्मान देकर, गुणो की लेनदेन करो.*.. देह ने जो सीमाओ में बांध कर, दिल को जो छोटा कर दिया था... अब अपने असली स्वरूप, आत्मिक भाव में डूबकर... दिल को अपनी विशालता से पुनः सजाओ...विश्व कल्याण कारी बनकर हर कर्म को करो कि... आपका कर्म सबके लिए प्रेरणा बने..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के अमृत वचनो को सुनकर अति आनन्द में डूबकर कहती हूँ :-* "मेरे सच्चे सहारे बाबा... आपने मेरे जीवन में आकर... इस मटमैले विकारी जीवन को गुणो के फूलो सा सुगन्धित बनाकर... मुझे इस विश्व धरा पर, अनोखा सजा दिया है... *अब मै आत्मा खुशियो की, और श्रेष्ठ कर्मो की मिसाल बनकर, हर दिल को श्रेष्ठता से सजाती जा रही हूँ.*.."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अति मीठा और प्यारा बनाकर कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मीठे बाबा की प्यार भरी छाँव में खिलकर... सदा गुणो और शक्तियो की झलक हर कर्म में दिखाओ... आत्मिक गुणो से हर कर्म को सजाओ... *सदा यह स्मृति रहे कि आप विशेष आत्माओ का... हर कर्म सारे संसार के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करता है.*..इसलिए हर कर्म को श्रीमत प्रमाण कर, जग को दीवाना बनाओ...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के ज्ञान रत्नों को पाकर खुशियो में झूमते हुए कहती हूँ :-* "सच्चे सच्चे सखा मेरे... मै आत्मा विकारो की गलियो में

खोकर... अपने गुणो और शक्तियो को पूर्णतः खो बेठी थी... मीठे बाबा आपने आकर मुझ पर इतनी मेहनत कर, मुझे फिर से गुणवान बनाया है... अब मै आत्मा *अपने हर कर्म में ईश्वरीय अदा दिखाकर... हर दिल को आदर और सम्मान देती जा रही हूँ.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सर्वगुण सम्पन्न बनाकर देवताई राज्य तिलक देते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... देह के भान में आकर, अपने मौलिक गुणो को पूरी तरहा खो बेठे थे... *अब जो प्यारे बाबा ने सच्चे अहसासो से भरा है... तो हर कर्म में उन मीठी अनुभूतियों को झलकाओ.*.. हर कर्म श्रीमत के रंग में रंगा हो... हर दिल आपसे खुशियां पाये... ऐसा मीठा प्यारा और निराला ईश्वर पुत्र बनकर, जीवन का हर कार्य करो...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से अमूल्य शिक्षाये पाकर, संवरे हुए जीवन को देख, प्रफुल्लित होकर कहती हूँ :-*"सच्चे सच्चे खिवैया बाबा... मीठे बाबा आपने जीवन को मूल्यों से सजाकर, मुझे कितना महान बना दिया है... अब मेरा कर्म असाधारण और महानता से सज गया है... *हर दिल मुझसे पूछता है... कि इतना मीठा, प्यारा और निराला, भला तुम्हें किसने बनाया है... मै मुस्करा कर कहती हूँ सिर्फ मेरे मीठे बाबा ने.*..."मीठे बाबा से दिली रुहरिहान् कर मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर आ गयी...

———————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप जो सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन है, उसे बड़े प्यार से याद करना है*"

➳ _ ➳ सर्व सम्बन्धों का सुख देने वाले अपने भगवान बाप, आल माइटी

अथॉरिटी शिव बाबा का मैं दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ जिन्होंने सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन बन, हर सम्बन्ध का सुख मुझे देकर मेरे जीवन को मिठास से भर कर मुझे तृप्त कर दिया। *जब - जब जिस - जिस सम्बन्ध की कमी को जीवन मे अनुभव किया, स्वयं भगवान ने आकर उसी सम्बन्ध का सुख दे कर, उस कमी को दूर किया*। कभी बाप के रूप में पालना दी, कभी माँ बन कर अपनी ममता की ठंडी छांव में मुझे बिठाया, कभी दोस्त बन कर मुझे उचित मार्गदर्शन दिया। कभी साजन बन कर मेरे हर सुख - दुख में मेरा साथ निभाया।

➳ _ ➳ *कितनी पदमा पदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे स्वयं भगवान ने उस हर सम्बन्ध का सुख दिया जो देह के सम्बन्धी कभी दे ही नही सकते* मन ही मन स्वयं से यह बातें करती अपने मीठे प्यारे बाबा पर मैं दिल से बलिहार जाती हूँ और खो जाती हूँ उन सर्व सम्बन्धों के अनुभव में जो बाबा हर रोज मुझे करवाते हैं।

➳ _ ➳ कभी मैं स्वयं को एक छोटी बच्ची के रूप में देखती हूँ जिसकी उंगली थामे बाबा उसे इस विषय सागर से निकाल उस दुनिया मे ले जा रहें है जहाँ अपरमपार सुख ही सुख हैं। *कभी मैं देखती हूँ मेरा सिर बाबा की गोदी में हैं और बाबा माँ बन कर अपनी ममता के आँचल में मुझे मीठी लोरी सुना कर सुला रहें हैं*। कभी मैं स्वयं को एक सुंदर झूले पर अपने खुदा दोस्त के साथ बैठ उनसे अपने दिल की ढेरों बातें करते देख रही हूँ। मेरा सच्चा दोस्त बन कर मेरे मीठे बाबा मेरे साथ बातें कर रहें हैं, मुझे सही रास्ता दिखा रहें हैं। *कभी मैं देखती हूँ बाबा साथी के रूप में मेरे हमसफ़र, मेरी छत्रछाया बन कदम - कदम पर मेरी रक्षा कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ इन सर्व सम्बन्धों के अनुभवमें खोई अब मैं सर्व सर्वसम्बन्धो की सैक्रीन अपने अति मीठे बाबा को बड़े प्यार से याद करती हूँ। *अपने प्यारे बाबा की याद का प्रतिफल मुझे मेरे बाबा से आ रही सर्वशक्तियों की मीठी फ़ुहारों के रूप में स्पष्ट अनुभव हो रहा है*। बाबा का प्यार, उनकी सर्वशक्तियों की

किरणों के रूप में परमधाम से सीधा मुझ आत्मा पर पड़ रहा है और मुझे अपने सच्चे निस्वार्थ प्यार में रंग कर, अपने जैसा बना रहा है। बाबा की शक्तिशाली किरणे मुझे उनके समान विदेही बना कर, अपने पास खींच रही हैं और *मैं आत्मा इस देह को छोड़ एक चमकता सितारा बन ऊपर आकाश की ओर जा रहा हूँ*।

➳ _ ➳ शीघ्र ही पांच तत्वों की इस दुनिया को पार करती हुई, आकाश से ऊपर, सूक्ष्म वतन से होती हुई मैं जगमग करती हुई ज्योति प्रवेश करती हूँ एक दिव्य प्रकाशमयी अलौकिक दुनिया में जो सर्वसम्बंधों की सैक्रीन मेरे मीठे बाबा का घर है। उस स्वीट साइलेन्स होम में मैं स्वयं को देख रही हूँ और एक अति मीठी गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ। *मन, बुद्धि पूरी तरह से मीठे प्यारे बाबा की याद में स्थिर हैं और मैं चात्रक बन अपने अति प्यारे बाबा को निहार रही हूँ*। उनके अति सुंदर दिव्य प्रकाशमय स्वरूप को निहारते हुए, उनसे निकल रही सर्वशक्तियों की किरणों के नीचे बैठ मैं स्वयं को उनकी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रही हूँ। *उनके बिल्कुल पास जा कर, उनके साथ टच हो कर उनकी लाइट माइट को स्वयं में भर रही हूँ*।

➳ _ ➳ भरपूर हो कर अब मैं आत्मा वापिस साकारी दुनिया की ओर लौट रही हूँ। अपने साकारी तन में विराजमान हो कर हर सम्बन्ध का सुख अपने प्यारे बाबा से लेते हुए, मैं देह और देह के झूठे सम्बन्धों से उपराम होने लगी हूँ। *सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन अति मीठे प्यारे बाबा के प्यार की मिठास से अपने जीवन को सदा भरपूर करते हुए, उनकी मीठी याद में रह कर मैं अपना एक - एक सेकण्ड सफल कर रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं नथिंगन्यू के पार्ट द्वारा विघ्नों को खेल समझकर पार करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं अनुभवी मूर्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सत्यता की विशेषता को धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा रूपी हीरे की चमक चारों ओर स्वत: फैलते अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं सत्य स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *अमृतवेले से लेकर जब उठते हो तो परमात्म प्यार में लवलीन होके उठते हो। परमात्म प्यार उठाता है।* दिनचर्या की आदि परमात्म प्यार होता है। प्यार नहीं होता तो उठ नहीं सकते। प्यार ही आपके समय की घण्टी है। प्यार की घण्टी आपको उठाती है। सारे दिन में परमात्म साथ हर कार्य

कराता है। *कितना बड़ा भाग्य है जो स्वयं बाप अपना परमधाम छोड़कर आपको शिक्षा देने के लिए आते हैं।* ऐसे कभी सुना कि भगवान रोज अपने धाम को छोड़ पढ़ाने के लिए आते हैं! *आत्मायें चाहे कितना भी दूर-दूर से आयें, परमधाम से दूर और कोई देश नहीं है।*

➳ _ ➳ 2. *परमधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम है। ऊंचे ते ऊंचे धाम से ऊंचे ते ऊंचे भगवान, ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने आते हैं।*

➳ _ ➳ 3. सतगुरू के रूप में हर कार्य के लिए श्रीमत भी देते और साथ भी देते हैं। सिर्फ मत नहीं देते हैं, साथ भी देते हैं।

➳ _ ➳ 4. *अगर सुनते हो तो परमात्म टीचर से, अगर खाते भी हो तो बापदादा के साथ खाते हो।* अकेले खाते हो तो आपकी गलती है। बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। आप बच्चों का भी वायदा है - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे..... सोना भी अकेले नहीं है। अकेले सोते हैं तो बुरे स्वप्न वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं। लेकिन बाप का इतना प्यार है जो सदा कहते हैं मेरे साथ सोओ, अकेले नहीं सोओ। तो उठते हो तो भी साथ, सोते हो तो भी साथ, खाते हो तो भी साथ, चलते हो तो भी साथ।

➳ _ ➳ *अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो लेकिन मालिक बाप है।* दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बास बापदादा है, यह निमित्त मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं। कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रेन्ड बनकर बहलाते हैं। फ्रेन्ड भी बन जाता है। *कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं।* अगर कभी-कभी नटखट होके रूठ भी जाते हो, रूसते भी हो बहुत मीठा-मीठा। लेकिन बाप रूठे हुए को भी मनाने आते हैं। बच्चे कोई बात नहीं, आगे बढ़ो। जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं। *तो हर दिनचर्या किसके साथ है? बापदादा के साथ।*

✺ *ड्रिल :- "सारे दिन में बापदादा के साथ का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ *परमात्मा जो मुझ आत्मा जैसा ही है... हम आत्माओं के परमपिता...* जो प्यार का सागर है... शांति का सागर है... सुख का सागर है... गुणों का भंडार है... हमसे कितना प्यार करता है.... अनकंडीशनल प्यार... *परमपिता जो सारे दिन हर सम्बन्धों में साथ रहते हैं... सदा साथ निभाते हैं...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा कितनी भाग्यवान हूँ जो अमृतवेले परमात्म प्यार में लवलीन हो उठती हूँ...* वो परमात्म प्यार की ही घंटी है जो मुझ आत्मा को जगा देता है... कल्प-कल्प की भाग्यवान आत्मा जिसकी दिनचर्या का आदी स्वयं परमात्मा के प्यार से शुरू होता है... वाह रे मैं... *मैं आत्मा बापदादा का साथ सर्व सम्बन्धों में अनुभव करती हूँ...* टीचर रूप में ऊंचे ते ऊंचे बाप... ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने दूर देश से आते हैं...

➳ _ ➳ *जब मैं आत्मा कर्म क्षेत्र पर आती हूँ... तो सद्गुरु बाबा से मिली श्रीमत रूपी लगाम थाम लेती हूँ... ट्रस्टी बन जाती हूँ...* कभी जो डगमग हो जाऊं तो वह झट साथ देने के लिए खड़ा रहता है... *बाबा से जन्मों जन्म वायदा करते आयी हूँ... कि बाबा जब आयेंगे... साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे...*

➳ _ ➳ *मीठे बाबा माँ के रूप में असीम प्यार देते हैं... निस्वार्थ प्रेम... जब चाहूँ शिव माँ की गोद में आ जाती हूँ...* और सुकून पाती हूँ... मुझ आत्मा के पिता रूप में पालना देते रहते हैं... सुख, शान्ति, पवित्रता, शक्ति, ज्ञान का वर्षा देते हैं... पिता रूप में साथ पाकर किसी बात की फिकर नहीं, कोई डर नहीं...

➳ _ ➳ जो मैं आत्मा कभी उदास हो जाऊँ... जो कभी प्रेम में आँसू आ जाये... तो खुदा दोस्त बन बहलाते हो... *साजन रूप में, साथी बन मेरे आँसू दिल की डिब्बी में मोती समान समा देते हो...* रुठ जाऊँ तो तुम्हें बहुत मीठा लगता है और मनाने आ जाते हो... मेरे पास बैठ समझानी देते हो जो बीता

भूल जाओ... बीती को बीती कर दो... आज को देखो... आने वाले सुनहरे भविष्य को देखो... मैं आत्मा मुस्कुरा देती हूँ... कितना अहोभाग्य मेरा जो परमात्मा स्वयं हर सम्बन्ध में सारे दिन साथ देता है... दैहिक सम्बन्ध तो विनाशी होता है... लेकिन बापदादा से सम्बन्ध तो अविनाशी है... *वाह रे मैं आत्मा... वाह बाबा वाह... ओम् शान्ति।*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔